गीता वर्मा 'गीत'

जन्म स्थान- कानपुर (उ.प्र.)
शिक्षा- स्नातक, इंजीनियरिंग
प्रकाशन- अनेक साझा संग्रहों एवं वेब पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित
सम्मान- अनेक सम्मान एवं पुरस्कार
संप्रति- सीनियर सेक्शन इंजीनियर दिल्ली मेट्रो

कुछ लिखूँ

मैं आँसू के धागों की चुनरी बुनूँ,
जिसे ओढ़ सागर की जानिब चलूँ,
मैं नदिया समर्पण के भावों की हूँ,
चलो आज खुद पर ही मैं कुछ लिखूँ...

किसी साँवरी के हृदय में पली,
करुणा कभी त्याग में मैं ढली,
तेरी चाहतों के दहकते बदन,
को छूकर मैं भीतर ही भीतर गली,
बर्फ देह कैसे ये जल हो गयी
मेरे सूर्य मैं तो तरल हो गयी
मैं संध्या समर्पण के भावों की हूँ,
चलो आज खुद पर ही मैं कुछ लिखूँ...

तेरी लौ में जलती चली जाऊँगी
उजालों में ढलती चली जाऊँगी,
भले ख़त्म होती रहे ज़िन्दगी,
निराशा ही ढोती रहे ज़िन्दगी,
तेरे नूर में तेरा दर्पण हूँ मैं,
मेरे दीप तुझको ही अर्पण हूँ मैं,
मैं बाती समर्पण के भावों की हूँ,
चलो आज खुद पर ही मैं कुछ लिखूँ...

न है जीते जी अब तुझे छोड़ना,
मैं मरके भी अब मुँह नही मोड़ना,
तुम्हें याद आऊँ तो रोना नहीं,
कसम तुमको पलकें भिगोना नहीं,
कोई दिल निराशा में गर देखना,
किरण उसमे आशा की भर देखना,
मैं दुनिया समर्पण के भावों की हूँ,
चलो आज खुद पर ही मैं कुछ लिखूं...

मैं नदी हूँ

कौन जानेगा मेरी उस पीर को,
जो मैं आंसू से वरक पे लिख रही!
मैं नदी हूँ हर लहर की वेदना,
बन के बदली, मैं फ़लक पे लिख रही!

मैं अगर सीता बनी तो हो गयी वन वासिनी,
उर्मिला बन कर रही महलों में भी सन्यासिनी,
बह गया आँखों से जो वो क्या लिखूँ?
जो टिका आंसू पलक पे लिख रही!
मैं नदी हूँ . . . .

बस समपर्ण सीख पाई, हक़ कभी जाने नहीं,
और कर पाई कभी कुछ काम मनमाने नहीं,
बचपने की उम्र में जो खो गयी,
नैन की अल्हड़ चमक पे लिख रही!
मैं नदी हूँ . . . .

मैं थी राधा, किन्तु मेरे प्यार ने छोड़ा मुझे,
रुक्मिणी जब भी बनी, बस घर से ही जोड़ा मुझे,
दिल में लेकर मर गयी अतृप्त सी,
प्यार पाने की ललक पे लिख रही!
मैं नदी हूँ . . . .

सिर्फ अत्याचार मुझपर और कहते देवियाँ,
हाथ में इक दीप देकर हैं निमंत्रित आंधियां,
दिल के जख्मों पे जो छिड़के उम्र भर,
आज मैं हर उस नमक पे लिख रही!
मैं नदी हूँ . . . .

दिल के जख्मों पे जो छिड़के उम्र भर,
आज मैं हर उस नमक पे लिख रही!
मैं नदी हूँ . . . .

ISSN:2583-8849